रक्षा बन्धन – एक नवीन दृष्टिकोण

रक्षा बन्धन अथवा राखी का पर्व हर वर्ष बहन-भाई के पवित्र रिश्ते के स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है। जैसे आजकल पितृ दिवस **(Fathers' Day),** मातृ दिवस **(Mothers' Day)** मनाने की प्रथा प्रचलित हो गई है, उसी अनुरूप रक्षा बन्धन को बहन दिवस **(Sisters' Day)** भी कह सकते हैं।

राखी के दिन बहनें बड़े उमंग-उत्साह से अपने भाइयों की कलाई पर पवित्र प्रेम के सूत्र के रूप में रंगबिरंगी राखी बांधती हैं और भाई की दीर्घायु की मंगल कामना करती हैं।

रक्षा बन्धन भाइयों द्वारा बहनों के सम्मान यानि इज्जत की रक्षा का संकल्प दिवस भी है। इस दिन भाई अपनी बहन से राखी बंधवाते समय उसकी इज्जत की रक्षा करने के अपने कर्त्तव्य के संकल्प को दोहराता है। वास्तव में यही इस पर्व का मुख्य उद्देश्य है।

यद्यपि रक्षा बन्धन का यह उद्देश्य अति श्रेष्ठ है, किन्तु यह भी एक दुर्भाग्यपूर्ण लेकिन कटु सत्य है कि आज समाज में नारी के प्रति कुदृष्टि, कुवृत्ति इतनी फैल चुकी है कि नित्यप्रति महिलाओं से असभ्य व्यवहार और बलात्कार की घटनाएं हो रही हैं जिससे पूरी नारी जाति परेशान है। लोग अपनी बहन-बेटियों को अकेले कहीं भेजने से डरते हैं।

ऐसी सोचनीय स्थिति में राखी का पावन पर्व भी एक प्रथा मात्र बनकर रह गया है। आजकल किसी भी बहन की इज्जत अचानक ही कहीं पर भी संकट में पड़ सकती है। उस समय घटनास्थल पर पहुंच कर अपनी बहन की रक्षा करना अब भाई के वश से बाहर की बात हो गई है।

ऐसी हालत में रक्षा बन्धन को सार्थक मनाने के लिए इसकी विधि में कुछ संशोधन करने, कुछ नवीनता लाने की आवश्यकता है। ब्रह्माकुमारी बहनों का विचार है, कि जिन लोगों से बहन के सम्मान को खतरा हो सकता है, उनकी अपनी भी तो बहनें होंगी जिनकी इज्जत की रक्षा करना उनकी भी तो जिम्मेदारी है। अतः राखी बांधते समय यदि हर बहन अपने भाई से यह वचन ले कि वह अन्य सभी बहनों को भी अपनी बहन की तरह समझेगा, और उन्हें पवित्र दृष्टि से देखेगा तो सभी बहनों के सम्मान की रक्षा हो सकती है।

प्राचीन प्रथा और कथायें

वास्तव में बहन द्वारा भाई को राखी बांधने की प्रथा बहुत प्राचीन नहीं है। इससे पूर्व परिवार के पुरोहित (ब्राह्मण) राखी बांधा करते थे। रक्षा बन्धन के दिन वे अपने यजमानों के घर जाकर न केवल परिवार

के बच्चों, स्त्री, पुरुष, सभी सदस्यों को, बल्कि घर के खिड़की, दरवाजों, गाय आदि को भी “मौली” यानि जनेऊ के धागे की राखी बांधते थे। इसे शुभ और मंगलकारी माना जाता था।

इस अवसर पर वे प्रायः रक्षाबन्धन से सम्बंधित दो पुराणिक कथायें भी अपने यजमानों को सुनाते थे। एक कथा तो यह है कि एक बार जब देव-असुर संग्राम के दौरान राजा इंद्र का सिंहासन डोलने लगा तो इन्द्राणी ने इंद्र को राखी का पवित्र सूत्र बांधा जिससे उसे विजय प्राप्त हुई। दूसरी कथा यह है कि यमराज की बहन यमुना ने उसे राखी बांधी और वचन दिया कि जो प्राणी रक्षाबन्धन के पावन पर्व पर अपनी बहन से राखी बंधवाएगा उसे यम के दूत याचनाएं नहीं देंगे।

उसके पश्चात् पुरोहित सबको आशीर्वाद देते थे और उन्हें दक्षिणा और उपहार देकर विदा किया जाता था। यह प्राचीन प्रथा आज भी पड़ोसी देश नेपाल में और भारत में भी कहीं-कहीं प्रचलित है।

परमात्मा ही सच्चा रक्षक

ब्रह्माकुमारी बहनें रक्षाबन्धन को ‘विश्व बन्धुत्व’ पर्व के रूप में मनाती हैं। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से सभी मनुष्यात्माएं एक परमात्मा की सन्तान होने के नाते आपस में भाई-भाई हैं। सर्वशक्तिवान परमात्मा ही सबका सच्चा रक्षक है किन्तु परमात्मा भी उन्हीं की रक्षा करता है, जो स्वयं भी अपनी रक्षा करते हैं। गीता में वर्णित पांच मनोविकार यानि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ही आत्मा के शत्रु अर्थात् सर्वत्र दुराचार, भ्रष्टाचार और पापाचार के मूल कारण हैं। इनकी उत्पत्ति देह-अभिमान से होती है। अतः ब्रह्माकुमारी बहनें सबको अपना रूहानी भाई मानते हुए उन्हें आत्म-स्मृति और विकारों पर विजयी बनने का तिलक देती हैं, और अन्न दोष, दुर्व्यसनों और कुसंग एवं कुवृत्ति से बचने के लिए उन्हें परमात्म-स्मृति द्वारा ईश्वरीय रक्षा प्राप्त करने की राखी बांधती हैं।

‘विश्व बन्धुत्व’ का आधार ‘आत्म बन्धुत्व’ है। अतः ब्रह्माकुमारी बहनें भारत में ही नहीं सारे विश्व के 137 देशों में अपने राजयोग केन्द्रों द्वारा अधिक से अधिक मनुष्यात्माओं को राखी बांध कर ‘पवित्र बनो’ का ईश्वरीय शुभ सन्देश देती हैं। इनमें नेता, अभिनेता, बसचालक, कारागार के बंदी, नेत्रहीन, अनाथ सभी प्रकार के लोग सम्मिलित होते हैं।

राखी बंधवाने के पश्चात् भाई द्वारा बहन को कुछ धनराशि देने की भी प्रथा है। ब्रह्माकुमारी बहनें सभी से पांच खोटे सिक्के यानि उपरोक्त पांच मनोविकार देने का ही आग्रह करती हैं, जिसमें सच्चा कल्याण निहित है।

सौजन्य: ब्रह्माकुमारीज्

*****